RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

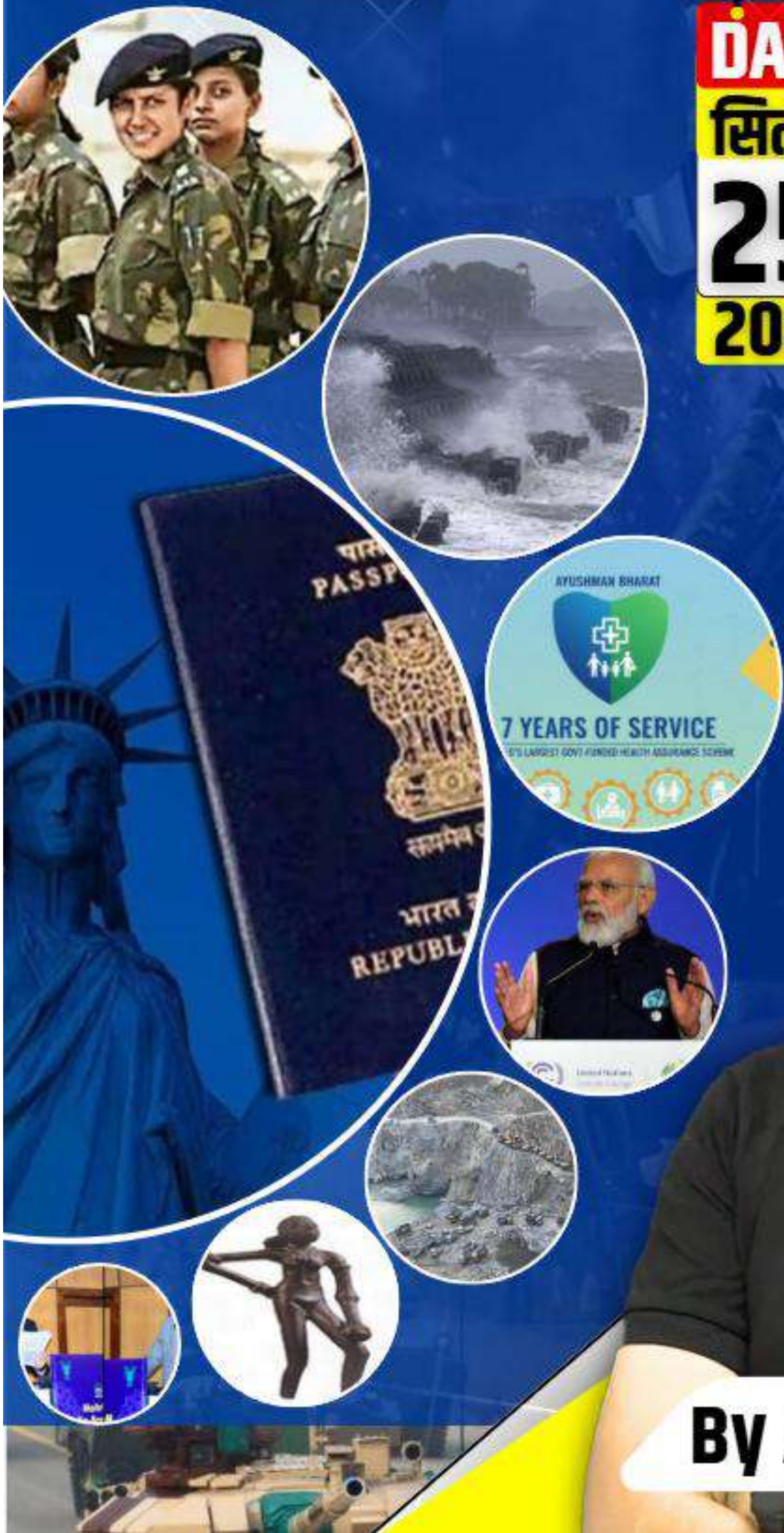

DATE
सितंबर
25
2025

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors

By Ankit Avasthi Sir

महिला शॉर्ट सर्विस कमीशन अधिकारियों को स्थायी कमीशन देने में कोई भेदभाव नहीं: केंद्र / No discrimination in grant of permanent commission to women Short Service Commission officers: Centre

संदर्भ:

केंद्र सरकार ने बुधवार को सुप्रीम कोर्ट को आश्वस्त किया कि ***शॉर्ट सर्विस कमीशन (SSC) की महिला सैन्य अधिकारियों को स्थायी कमीशन देने में किसी तरह का भेदभाव नहीं किया जा रहा है***। सरकार ने स्पष्ट किया कि महिला अधिकारियों का मूल्यांकन **पुरुष अधिकारियों के समान मानकों पर किया जा रहा है** और चयन प्रक्रिया में सभी निर्धारित नियमों का पालन किया जा रहा है।

क्या है 'नियुक्ति मानदंड' (Criteria Appointments)?

'नियुक्ति मानदंड' का आशय उन विशेष जिम्मेदारियों या नियुक्तियों से है, जिनमें अफसर को बेहद कठिन, संवेदनशील और रणनीतिक महत्व वाले इलाकों में कमान संभालनी पड़ती है। जैसे- दुश्मन सीमा से सटे क्षेत्रों में तैनाती, उच्च जोखिम वाले अभियानों में भागीदारी या ऐसी जगह सेवा करना जहां सैन्य दबाव और चुनौतियां अधिक हों।

- पुरुष अफसरों के लिए ऐसी पोस्टिंग को उनकी **वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट (ACR)** में 'मानदंड रिपोर्ट' (Criteria Report) के रूप में दर्ज किया जाता है। यह उनके मूल्यांकन और स्थायी कमीशन (Permanent Commission) पाने की संभावना को मजबूत करता है।
- वहीं, महिला अफसरों के मामले में, भले ही उन्होंने कठिन और संवेदनशील इलाकों में कमान संभाली हो, उनकी पोस्टिंग को अक्सर **'गैर-मानदंड रिपोर्ट' (Non-Criteria Report)** बताया गया। परिणामस्वरूप उनकी सेवाओं को आधिकारिक रूप से उस महत्व का दर्जा नहीं मिला, जिससे उनके करियर विकास और स्थायी कमीशन पर प्रतिकूल असर पड़ा।

महिला अफसरों का योगदान : प्रमुख उदाहरण

- लेफ्टिनेंट कर्नल वनीता पाधी को कांगो में संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन और फिरोजपुर (पंजाब) बॉर्डर एरिया में कंपनी कमांडर की जिम्मेदारी सौंपी गई।
- लेफ्टिनेंट कर्नल चांदनी मिश्रा 88 देशों में पहली महिला पायलट बनीं, जिन्होंने MEAT (Manoeuvrable Expendable Aerial Target) उड़ाने का कार्य किया।
- लेफ्टिनेंट कर्नल गीता शर्मा को लद्दाख में गलवान ऑपरेशन के दौरान कम्युनिकेशन यूनिट की कमान दी गई।
- लेफ्टिनेंट कर्नल स्वाति रावत को ऑपरेशन सिंदूर और जम्मू-कश्मीर के बासौली क्षेत्र में काउंटर इंसर्जेंसी ऑपरेशन्स की कमांडिंग पोस्टिंग दी गई।
- एक महिला अफसर ने बालाकोट एयर स्ट्राइक से विमान सुरक्षित वापस लाने का कार्य किया, लेकिन उन्हें केवल एक सप्ताह बाद ही सेवा छोड़ने के लिए कहा गया।

महिला अफसरों और स्थायी कमीशन विवाद:

महिला अफसरों का तर्क:

- उन्होंने कहा कि उन्हें **स्थायी कमीशन (Permanent Commission)** से वंचित करना,
  - **अनुच्छेद 14** – समानता के अधिकार, और
  - **अनुच्छेद 15** – लैंगिक भेदभाव पर रोक,

  का स्पष्ट उल्लंघन है।
- उनका कहना था कि **समान जिम्मेदारियों और योगदान** के बावजूद उनके साथ भेदभाव किया गया।

सुप्रीम कोर्ट का ऐतिहासिक फैसला (फरवरी 2020)

- महिला अफसरों को केवल **स्टाफ पदों** तक सीमित रखना **"असंगत और अवैध"** बताया।
- आदेश दिया गया कि **योग्य महिला अफसरों को स्थायी कमीशन** दिया जाए।

महिला अफसरों की बढ़ती संख्या:

- साल 2014 में भारतीय सेना, नौसेना और वायुसेना में महिला अफसरों की संख्या लगभग 3,000 थी। आज यह संख्या 11,000 से भी अधिक हो गई है, जो न केवल संख्या में बढ़ोतरी बल्कि संस्थागत मानसिकता में बदलाव का भी संकेत देती है।
- सरकार ने वर्षों में महिलाओं के लिए रक्षा क्षेत्र में नए अवसर खोले हैं, जिनमें **महिला अफसरों को स्थायी कमीशन (Permanent Commission)** देने का कदम शामिल हैं।

निष्कर्ष: महिला अफसरों ने कई बार समान परिस्थितियों में पुरुष अफसरों के बराबर या बेहतर प्रदर्शन किया है। गलवान, बालाकोट और ऑपरेशन सिंदूर जैसे संवेदनशील अभियानों में उनका योगदान महत्वपूर्ण रहा। इसके बावजूद उन्हें स्थायी कमीशन में समान अवसर नहीं मिला। यह मामला समान जिम्मेदारी निभाने वाले अफसरों के मूल्यांकन और करियर विकास के पैमानों पर सवाल उठाता है।

Apni Pathshala एक कदम उज्ज्वल भविष्य की ओर

सुपर टाइफून रगासा / Super Typhoon Ragasa

संदर्भ:

नेशनल मौसम विज्ञान केंद्र ने बुधवार को बताया की फिलिपींस में भारी तबाही मचाने के बाद सुपर टाइफून **रगासा** अब चीन के **गुआंगडोंग प्रांत के यांगजियांग** तक पहुच चुका है। कई मौसम पूर्वानुमानकर्ताओं द्वारा इसे **"तूफानों का राजा"** कहा गया है। रगासा ने साउथ चाइना और **हांगकांग** में **तेज हवाएं, भारी बारिश और ऊँचे समुद्री लहरें** लायीं।

सुपर टाइफून रगासा का रास्ता:

- **फिलिपींस:** पहले सबसे अधिक प्रभावित हुआ, तेज हवाओं और बाढ़ के साथ व्यापक नुकसान।
- **ताइवान:** तूफान के पास से गुजरते हुए भारी बारिश और समुद्री ऊंची लहरें।
- **हांगकांग:** तेज हवाएं, बारिश और ऊँची लहरों का सामना।

साउथ चाइना (यांगजियांग, गुआंगडोंग): लैंडफॉल स्थान, जहां भारी बारिश और तूफानी लहरें जारी।

185 किमी प्रति घंटे की रफ्तार:

रगासा को पिछले कई वर्षों में आए सबसे ताकतवर तूफानों में से एक माना जा रहा है। हांगकांग के मौसम विभाग के मुताबिक, इस समय तूफान की रफ्तार 185 किलोमीटर प्रति घंटा से ज्यादा है।

क्या होता है साइक्लोन?

साइक्लोन यानी चक्रवात वायुमंडल की एक प्राकृतिक प्रक्रिया है, जो समुद्र की सतह पर तापमान बढ़ने और वायुदाब में बदलाव के कारण बनता है। इसके केंद्र में निम्न वायुदाब और बाहर उच्च वायुदाब होता है, जिसके चलते हवाएं तेजी से घूमती हैं। गर्म हवा हल्की होकर ऊपर उठती है और पृथ्वी के घूमने (कोरिओलिस प्रभाव) के कारण सीधी न चलकर गोलाकार घूमने लगती है। उत्तरी गोलार्ध में चक्रवात एंटी-क्लॉकवाइज और दक्षिणी गोलार्ध में क्लॉकवाइज दिशा में घूमते हैं। इनका आकार 80 से 300 किलोमीटर तक हो सकता है। पहले ये मुख्यत: गर्मियों में आते थे, लेकिन अब ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन की वजह से सर्दियों में भी आने लगे हैं।

साइक्लोन का प्रकार	हवा की रफ्तार (किमी/घंटा)	खतरे का स्तर / प्रभाव
साइक्लोनिक स्टॉर्म	62 – 88	सबसे कम घातक, समुद्री गतिविधियों को प्रभावित करता है
सीवियर साइक्लोन	89 – 120	नावों और जहाजों के लिए खतरनाक
वेरी सीवियर साइक्लोन	118 – 165	जमीन पर पहुंचने पर जान-माल का बड़ा नुकसान
एक्सट्रीमली सीवियर साइक्लोन	166 – 220	बेहद विनाशकारी, इन्फ्रास्ट्रक्चर को गंभीर नुकसान
सुपर साइक्लोन	220 से अधिक (300–400 तक)	सबसे खतरनाक, पेड़, वाहन और इमारतें तबाह कर सकता है

चक्रवातों का नामकरण क्यों जरूरी है?

चक्रवातों को नाम देने से भ्रम की स्थिति से बचा जा सकता है, खासकर जब एक ही समय में कई तूफान बन रहे हों। इससे लोगों तक सही जानकारी पहुंचाना आसान होता है और आपदा प्रबंधन एवं राहत कार्यों में तेजी लाई जा सकती है। नामकरण से जनता में जागरूकता भी बढ़ती है और चेतावनी अधिक प्रभावी ढंग से दी जा सकती है।

कैसे किया जाता है नामकरण?

- विश्व मौसम विज्ञान संगठन (WMO) ने प्रत्येक उष्णकटिबंधीय चक्रवात को नाम देने की परंपरा शुरू की।
- हिंद महासागर क्षेत्र के लिए 2004 में भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, मालदीव, म्यांमार, ओमान और थाईलैंड ने मिलकर नामकरण प्रणाली तय की।
- इन देशों द्वारा पहले से दिए गए नामों की सूची से क्रमवार नाम चुना जाता है।
- नाम सरल, याद रखने योग्य और उच्चारण में आसान होते हैं।
- आपत्तिजनक या विवादास्पद नामों से बचा जाता है।

चक्रवातों के क्षेत्र और उनके नाम:

चक्रवातों के नाम	क्षेत्र
टाइफून	दक्षिण पूर्व एशिया और चीन
हरिकेन	उत्तरी अटलांटिक पूर्वी प्रशांत क्षेत्र
विली-विली	उत्तर पश्चिम ऑस्ट्रेलिया
साइक्लोन	दक्षिण पश्चिम प्रशांत और हिन्द महासागर
टॉरनैडो यूएसए	पश्चिम अफ्रीका और दक्षिणी संयुक्त राज्य अमेरिका तूफान

H-1B वीजा में नया बदलाव / New changes in H-1B visa

संदर्भ:

अमेरिका ने H-1B वीजा प्रोग्राम में बड़े बदलाव की योजना पेश की है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा हाल ही में शुल्क को 100,000 डॉलर तक बढ़ाने की घोषणा के कुछ दिन बाद, अब होमलैंड सिक्योरिटी विभाग मौजूदा लॉटरी सिस्टम को खत्म कर एक **वेटेड सिलेक्शन प्रोसेस** लागू करना चाहता है। इसका उद्देश्य उच्च कौशल और अधिक वेतन पाने वाले पेशेवरों को प्राथमिकता देना है, हालांकि सभी वेतन स्तरों पर नियोक्ताओं के लिए H-1B वर्कर्स रखने का अवसर बरकरार रहेगा।

H-1B वीजा में नया बदलाव: अब वेतन होगा आधार

क्या बदलेगा?

- अब तक **H-1B वीजा** के लिए चयन **लॉटरी सिस्टम** से होता था।
- नए नियम के अनुसार, चयन **वेतन-आधारित वेटेड सिलेक्शन प्रक्रिया** से होगा।
- लक्ष्य: अधिक वेतन देने वाली कंपनियों और आवेदकों को प्राथमिकता देना।

उद्देश्य (Objective)

1. **अमेरिकी श्रमिकों के वेतन की सुरक्षा** – कम वेतन वाले विदेशी पेशेवरों की भर्ती से अमेरिकी कर्मचारियों पर पड़ने वाले नकारात्मक असर को रोकना।
2. **अमेरिकी कंपनियों को प्रोत्साहन** – उन्हें कम वेतन वाले विदेशी कर्मचारियों के बजाय अधिक अमेरिकियों को नौकरी देने के लिए प्रेरित करना।
3. **रूढ़िवादी आलोचनाओं का समाधान** – जो कहते थे कि H-1B वीजा धारक अमेरिकी नागरिकों की नौकरियां छीन लेते हैं।

नया वेतन-आधारित चयन (Weighted Selection Process)

चार वेतन स्तरों पर चयन होगा।

- **उच्चतम वेतन (लगभग $1,62,528 सालाना)** पाने वाले आवेदकों को **चार बार मौका** मिलेगा।
- **निचले स्तर** वाले आवेदकों को केवल **एक बार मौका**।
- **नतीजतन:**
  - **सीनियर और हाई-पेइंग रोल्स** को प्राथमिकता मिलेगी।
  - **नए ग्रेजुएट्स और जूनियर कर्मचारियों** के अवसर सीमित होंगे।

क्या है, H-1B वीजा प्रोग्राम:

H-1B वीजा एक नॉन-इमिग्रेंट, नियोक्ता-प्रायोजित कार्य वीजा है, जिसे इमिग्रेशन एक्ट, 1990 के तहत बनाया गया। यह अमेरिकी नियोक्ताओं को अस्थायी रूप से विदेशी पेशेवरों को नौकरी पर रखने की अनुमति देता है, खासकर उन पदों के लिए जिन्हें उच्च कौशल की आवश्यकता होती है। यह वीजा आईटी, इंजीनियरिंग, वित्त और हेल्थकेयर जैसे क्षेत्रों में कौशल की कमी को पूरा करने में मदद करता है।

मुख्य प्रावधान:

- **योग्यता:** आवेदक के पास **स्नातक डिग्री या उच्चतर**, या इसके समकक्ष कार्य अनुभव होना आवश्यक है।
- **वार्षिक सीमा:** H-1B वीजा पर हर साल सीमा होती है और इसे **USCIS द्वारा लॉटरी सिस्टम** के माध्यम से आवंटित किया जाता है।
  - सामान्य कोटे के तहत **65,000 नए वीजा** जारी होते हैं।
  - **अमेरिका की उच्च डिग्री धारकों** के लिए अतिरिक्त 20,000 वीजा उपलब्ध हैं।
- **मुक्तियाँ:** कुछ H-1B कर्मचारियों, जैसे उच्च शिक्षा संस्थानों, गैर-लाभकारी या सरकारी अनुसंधान संगठनों में काम करने वालों को वार्षिक सीमा से छूट दी जाती है।
- **वैधता:** प्रारंभिक अवधि **3 साल** की होती है, जिसे **6 साल तक बढ़ाया** जा सकता है।
- **आजीवन सीमा:** किसी व्यक्ति के लिए कुल H-1B वीजा की संख्या पर कोई सीमा नहीं है, बशर्ते प्रत्येक वीजा मानक आवेदन और अनुमोदन प्रक्रिया का पालन करे।
- **डुअल-इंटेंट वीजा:** H-1B धारक स्वयं और योग्य परिवार सदस्यों के लिए ग्रीन कार्ड के लिए आवेदन कर सकते हैं, जिससे लंबी अवधि के निवास का मार्ग खुलता है।
- **सबसे बड़े लाभार्थी:** भारतीय पेशेवर सबसे बड़े लाभार्थी हैं, जो 2015 से H-1B याचिकाओं का **70% से अधिक** हिस्सा बनाते हैं, इसके बाद चीन का स्थान है।

आयुष्मान भारत के सात साल / Seven Years of Ayushman Bharat

संदर्भ:

आयुष्मान भारत योजना ने अपने सात साल पूरे कर लिए हैं। सितंबर 2018 में रांची से शुरू की गई यह योजना दुनिया की सबसे बड़ी सरकारी स्वास्थ्य बीमा योजना है। इसने भारत की स्वास्थ्य व्यवस्था में बड़ा बदलाव लाया है और अब तक **55 करोड़ से अधिक लाभार्थियों** तक पहुंच बनाई है।

आयुष्मान भारत (Ayushman Bharat):

- भारत सरकार की यह प्रमुख (Flagship) पहल सर्वजन स्वास्थ्य कवरेज (Universal Health Coverage) प्राप्त करने के उद्देश्य से शुरू की गई है।
- इसमें दो मुख्य घटक शामिल हैं:
    1. **आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन (ABDM)** – एकीकृत डिजिटल हेल्थ इन्फ्रास्ट्रक्चर का निर्माण।
    2. **प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (PM-JAY)** – कमजोर तबकों को अस्पताल में भर्ती होने पर सालाना ₹5 लाख तक का स्वास्थ्य कवर।

प्रमुख घटक (Key Components):

1. प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (PM-JAY):

- प्रति परिवार **₹5 लाख सालाना स्वास्थ्य बीमा** (Secondary और Tertiary Care) प्रदान करती है।
- लाभार्थियों को **कैशलेस और पेपरलेस** इलाज की सुविधा, सूचीबद्ध (Empaneled) सरकारी और निजी अस्पतालों में।
- उद्देश्य:
    - परिवारों को **भारी स्वास्थ्य खर्च (Catastrophic Expenditure)** से बचाना।
    - स्वास्थ्य खर्च के कारण गरीबी में धकेले जाने की समस्या को कम करना।

2. स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्र (Health and Wellness Centres – HWCs):

- प्राथमिक (Primary), द्वितीयक (Secondary) और तृतीयक (Tertiary) स्तर पर **समग्र स्वास्थ्य सेवाएँ (Continuum of Care)** प्रदान करना।
- सेवाएँ:
    - रोग-निवारण (Prevention)
    - स्वास्थ्य संवर्धन (Promotion)
    - सामान्य देखभाल व बाह्य रोगी सेवाएँ (Ambulatory Care)

पिछले सात वर्षों की प्रमुख उपलब्धियाँ (Ayushman Bharat):

1. बड़े पैमाने पर प्रभाव:

- योजना की शुरुआत से अब तक **55 करोड़ से अधिक लाभार्थियों** तक पहुँचा गया।
- **10.3 करोड़ से अधिक अस्पताल में भर्ती** की अनुमति दी गई, जिससे लगभग **₹1.48 लाख करोड़ की कैशलेस सुविधा** उपलब्ध हुई।
- देशभर में **1.8 लाख आयुष्मान आरोग्य मंदिर (Health & Wellness Centres)** सक्रिय हैं, जो निवारक (preventive) और प्रोत्साहनात्मक (promotive) स्वास्थ्य सेवाएँ दे रहे हैं।
- **सरकारी स्वास्थ्य व्यय** 29% से बढ़कर 48% हुआ, जबकि **जेब से खर्च (Out-of-Pocket Cost)** 63% से घटकर 39% पर आ गया।

2. लाभार्थियों का विस्तार:

- **2021:** आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन (ABDM) शुरू हुआ, जिससे प्रत्येक नागरिक को **Ayushman Bharat Health Account (ABHA ID)** दिया जाने लगा।
- **2022:** योजना का दायरा बढ़ाकर **12 करोड़ परिवारों** तक किया गया।
- **2024:** आशा कार्यकर्ता, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और उनके परिवारों को योजना में शामिल किया गया।
- **अक्टूबर 2024: 70 वर्ष से ऊपर वरिष्ठ नागरिकों** को आयुष्मान वय वंदना कार्ड के माध्यम से **सार्वभौमिक कवरेज** मिला।
- लगभग 1 करोड़ गिग और प्लेटफ़ॉर्म वर्कर्स (जैसे कैब ड्राइवर, डिलीवरी पार्टनर आदि) को योजना से जोड़ा जा रहा है।

भारत COP30 में ऊर्जा दक्षता लक्ष्य बढ़ा सकता है / India May Raise Energy Efficiency Target at COP30

संदर्भ:

भारत नवंबर 10 को ब्राज़ील में शुरु होने वाले **यूएन क्लाइमेट चेंज कॉन्फ्रेंस (COP 30)** के मौके पर अपने अद्यतन नेशनल्ली डिटरमाइंड कॉन्ट्रिब्यूशन्स (NDCs) पेश करेगा। पर्यावरण मंत्रालय के सूत्रों के अनुसार, इसमें ऊर्जा दक्षता सुधार (energy efficiency improvement) के लिए लक्ष्य को और बढ़ाया जा सकता है।

Nationally Determined Contributions (NDCs):

- **परिभाषा:** NDCs वे राष्ट्रीय स्तर पर तय प्रतिबद्धताएँ हैं, जो देशों ने **पेरिस समझौते (2015)** के अंतर्गत की हैं।
- **उद्देश्य:**
  - ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन (GHG Emissions) को कम करना।
  - जीवाश्म ईंधन (Fossil Fuels) की खपत को नियंत्रित करना।
  - वैश्विक तापमान वृद्धि को **2°C से नीचे** और संभव हो तो **1.5°C से नीचे** रखना (पूर्व-औद्योगिक स्तर की तुलना में)।
- **नियम:** प्रत्येक देश को अपने **NDCs हर पाँच वर्ष में अपडेट** करने होते हैं।

भारत के NDCs (Nationally Determined Contributions):

परिभाषा

- यह देश-विशेष जलवायु प्रतिबद्धताएँ हैं जिन्हें **पेरिस समझौते (2015)** के तहत अपनाया गया है।
- उद्देश्य: ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन कम करना, जीवाश्म ईंधन का नियंत्रित उपयोग करना और वैश्विक तापमान वृद्धि को **2°C से नीचे (संभव हो तो 1.5°C तक)** सीमित करना।

भारत के 2022 NDC लक्ष्य:

1. **उत्सर्जन तीव्रता (Emissions Intensity of GDP)** को **2005 के स्तर से 45% तक घटाना** (2030 तक)।
2. **50% बिजली क्षमता** को **गैर-जीवाश्म स्रोतों** (सौर, पवन, जलविद्युत, परमाणु) से हासिल करना (2030 तक)।
3. **कार्बन सिंक (Carbon Sink)** का निर्माण कर कम-से-कम **2–2.5 अरब टन CO_2** को अवशोषित करना (2030 तक, वनीकरण और वृक्षारोपण से)।

मुख्य शब्दावली

- **उत्सर्जन तीव्रता:** जीडीपी की प्रति इकाई पर होने वाला कार्बन उत्सर्जन। (यह कुल उत्सर्जन घटाने के बराबर नहीं है)।
- **गैर-जीवाश्म ईंधन क्षमता:** स्थापित बिजली उत्पादन क्षमता का वह हिस्सा जो नवीकरणीय ऊर्जा, जलविद्युत और परमाणु से आता है।

भारत की प्रगति (2023 तक):

- **33% कमी** उत्सर्जन तीव्रता में (2005–19 के बीच)।
- **50% स्थापित बिजली क्षमता** गैर-जीवाश्म स्रोतों से।
- वनीकरण और वृक्षारोपण कार्यक्रम जारी हैं, लेकिन **कार्बन सिंक लक्ष्य** चुनौतीपूर्ण है।

भारत की अगली पहल – NDC 3.0 (आगामी):

- नई समयसीमा: **2035 तक के लक्ष्य** तय होंगे।
- **भारत कार्बन मार्केट (2026 तक):**
  - इसमें **13 प्रमुख क्षेत्रों** को शामिल किया जाएगा।
  - कंपनियाँ **कार्बन रिडक्शन सर्टिफिकेट्स (CRCs)** के ज़रिए उत्सर्जन व्यापार कर सकेंगी।
- यह वैश्विक **UN Global Stocktake** रिपोर्ट का हिस्सा होगा, जिससे पता चलेगा कि दुनिया पेरिस समझौते के लक्ष्यों की ओर बढ़ रही है या नहीं।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य:

- **यूरोपीय संघ (EU):**
  - 2035 तक उत्सर्जन में **66%–72.5% की कमी (1990 स्तर से)**।
  - दीर्घकालिक लक्ष्य: **2050 तक नेट ज़ीरो**।
- **ऑस्ट्रेलिया:** 2035 तक **62%–70% की कमी (2005 स्तर से)**।
- **वैश्विक अंतर (Global Gap):**
  - यदि सभी देश अपने NDCs पूरे भी कर लें, तो भी दुनिया लगभग **3°C गर्म** होगी।
  - यह पेरिस समझौते के लक्ष्य **2°C से नीचे** से मेल नहीं खाता।

मिशन मौसम परियोजना / Mission Mausam Project

संदर्भ:

नेशनल सेंटर फॉर मीडियम रेंज वेदर फोरकास्टिंग (NCMRWF) और **न्यू स्पेस इंडिया लिमिटेड (NSIL)** ने *मिशन मौसम* परियोजना के तहत दिल्ली-एनसीआर और चेन्नई में दो **डायरेक्ट ब्रॉडकास्ट नेटवर्क (DBNet) स्टेशन** स्थापित करने के लिए एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए हैं।

डायरेक्ट ब्रॉडकास्ट नेटवर्क (DBNet)

- यह एक वैश्विक परिचालन ढांचा (global operational framework) है, जिसका उद्देश्य लो अर्थ ऑर्बिट (LEO) उपग्रहों से रियल-टाइम डेटा प्राप्त करना है।
- यह संख्यात्मक मौसम पूर्वानुमान (Numerical Weather Prediction – NWP) में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- इसके माध्यम से मौसम पूर्वानुमान, चक्रवात निगरानी और जलवायु अनुसंधान जैसे कई कार्यों में मदद मिलती है।
- यह उपग्रह से प्रसारित सिग्नल को प्राप्त कर कुछ ही मिनटों में प्रोसेस करता है, जिससे **डेटा उपलब्धता बेहद तेज़** हो जाती है।
- उद्देश्य: मौसम पूर्वानुमान और संबंधित सेवाओं को **अधिक सटीक और समयबद्ध** बनाना।

मिशन मौसम (Mission Mausam)

- इसे केंद्रीय मंत्रिमंडल ने सितम्बर 2024 में मंजूरी दी।
- यह पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (Ministry of Earth Sciences) की ₹2,000 करोड़ की पहल है।
- लक्ष्य: भारत को "Weather Ready" और "Climate Smart" बनाना।
- खासतौर पर कृषि और आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों के लिए मौसम और जलवायु पूर्वानुमान को बेहतर बनाना।
- इसमें उच्च-रिज़ॉल्यूशन मॉडल्स और सुपरकंप्यूटिंग जैसी उन्नत तकनीकों का उपयोग होगा।
- यह राष्ट्रीय और वैश्विक अनुसंधान संस्थानों के साथ सहयोग को बढ़ावा देता है ताकि भारत को मौसम और जलवायु विज्ञान में वैश्विक नेतृत्वकर्ता के रूप में स्थापित किया जा सके।

मोहनजोदड़ो 'डांसिंग गर्ल' / 'Dancing Girl'

संदर्भ:

राष्ट्रीय संग्रहालय, दिल्ली से हाल ही में मोहनजोदड़ो की प्रसिद्ध **'डांसिंग गर्ल'** की प्रतिकृति चोरी होने की खबर सामने आई है।

मोहनजोदड़ो की 'नाचती हुई लड़की'

- **आकार:** यह कांस्य से बनी **10.5 सेमी ऊँची** मूर्ति है।
- **तकनीक (Technique):**
  - इसे **लॉस्ट-वैक्स कास्टिंग विधि** से बनाया गया था।
  - इस प्रक्रिया में मोम की आकृति पर मिट्टी चढ़ाई जाती है, फिर मोम को पिघलाकर निकाल दिया जाता है और उसकी जगह पिघला हुआ धातु डाला जाता है।
  - यह तकनीक सिंधु घाटी सभ्यता (IVC) की उन्नत धातुकर्म (metallurgy) क्षमता को दर्शाती है।
- **रूप (Appearance):**
  - यह एक **युवा नग्न महिला आकृति** है।
  - गले में हार, एक हाथ में अनेक चूड़ियाँ और आत्मविश्वास भरी मुद्रा इसकी विशेषताएँ हैं।
  - एक हाथ कमर पर टिकाए हुए, सहज और निश्चिंत भाव-भंगिमा में खड़ी है।
- **कलात्मक महत्व (Cultural Significance):**
  - इसे एक **सांसारिक कलाकृति** माना जाता है।
  - यह मूर्ति **सौंदर्यबोध, यथार्थवादी कला और तकनीकी नवाचार** को प्रकट करती है।
  - यह दर्शाती है कि सिंधु घाटी सभ्यता केवल उपयोगितावादी नहीं, बल्कि कलात्मक दृष्टि से भी अत्यंत समृद्ध थी।

GS FOUNDATION For
UPSC & STATE PSC
इतिहास
अर्थव्यवस्था
भूगोल
भारतीय संविधान एवं राजव्यवस्था
1500x4
₹6000/-
₹4500/-
रोज़ाना लाइव क्लासेस
साप्ताहिक टेस्ट
क्लास की पीडीएफ (हिंदी + अंग्रेज़ी में)
लाइव डाउट सेशन
रोज़ाना प्रैक्टिस प्रश्न
COURSE VALIDITY
1 YEAR

FUNDAMENTALS OF
STOCK MARKET
LEARN HOW TO TRADE
FOUNDATION COURSE
OF MUTUAL FUND
INVEST IN KNOWLEDGE GROW YOUR WEALTH
COMBO OFFERS
BBK
Baaten Bazaar ki
COURSE FEE
~~₹4000/-~~
OFFER PRICE
₹2800/-
Course Validity
1 YEAR
एक निवेश समझदारी से..

FUNDAMENTALS OF
STOCK MARKET
LEARN HOW TO TRADE
Course fee
₹1999/-
COURSE VALIDITY
1 YEAR
Baaten Bazar Ki
INVESTMENT की करो जीरो से शुरुवात

FOUNDATION COURSE OF
MUTUAL FUND
Invest in Knowledge
Grow Your Wealth
Course fee
₹1999/-
COURSE VALIDITY
1 YEAR
एक निवेश समझदारी से..

PORTFOLIO BUILDING AND MANAGEMENT COURSE
+ (FUNDAMENTAL OF STOCK MARKET)
FREE
EMI AVAILABLE
BBK
» Long-Term Investing Foundations
» Principles of Value Investing and Stock
» Portfolio Construction Mastery
» Sectoral Investing
» Stock Picking Framework
» Active Portfolio Management Techniques
» Mega Cap vs Mid Cap Strategy
SPECIAL BONUS
COURSE VALIDITY
1 YEAR